सं श्रो वि (एफडी/गुड़गांव/153-86/16819.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महा प्रबन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, रिवाड़ी, के श्रीमक श्री खजान सिंह हैल्पर, पुत्र श्री लक्ष्मी बन्द मार्फत श्री एस. के. गोस्वामी, 647/7, जवाहर नगर, रेलवें रोड़, गुड़गांव तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में को भौड़योगिक विवाद है।

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीचोगिक विवाद श्रीघिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रीधित्युम की घारा 7-क के श्रीधिन गठित श्रीधोगिक श्रीधकरण, अहिरियाणा, फरीदाबाद को नी वे विनिदिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है श्रयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं :---

क्या श्री खजान सिंह हैल्यर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? संब श्रोब विव/पानीपत/105-86/16828.—चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) वाईस चांसलर, हिरयाणा एग्रीकल्चर यूनिर्विसटी, हिसार, (2) दी प्रोफेसर, वीड साईस इन्चार्ज, हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिर्विसटी, गांव उच्चानी, जिला करनाल, के श्रीमक श्री ग्रमर पाल, पुत्र श्री इन्द्र सिंह, गांव बुटरादी, डा० कावरोट, जिला मुजफरगढ़ (यू.पी.) -247776 तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है :

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रीचोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा ,ंसरकारी ग्रिधिसूचना सं० -3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा सकत ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उनने सम्बन्धिन नोचे लिखा मामला न्यायिनिणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिब्द करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादग्रस्त मामला है या विधाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री श्रमर पाल की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?
सं० ग्रो०वि०/पानीपत/105-86/16836.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) वाईस चासलर,
हरियाणा एग्रीकल्वर यूनिविस्टी, हिसार (2) दी प्रोफेसर, वीड साईस एड इन्चार्ज, हरियाणा एग्रीकल्वर यूनिविस्टी, गांव उच्चानी,
जिला श्ररताल के श्रमिक श्री प्रवीन कुमार, पुत्र श्री ग्रमर नाथ मार्फत श्री ग्रोम प्रकाश दरयाल सिगल सेकेटरी सुवार्डीनेट
इन्साईज यूनियन, 5, हुगल कालोनी, करनाल तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध
में कोई ग्रीग्रोगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिलये, मब, श्रीबोगिक विवाद मिनियम, 1947 की घारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यराल इसके द्वारा सरकारी श्रीवसूचना सं० 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 ग्रमैल, 1984 द्वारा छक्त श्रीवित्यम की घारा 7 के ग्रमीन गठित श्रम न्यायालग, प्रम्माला, की विवादगस्त या उत्तने मम्बित्या नांने निवाद नांने निवाद नांने विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री प्रवीत कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि/पानीपत/105-86/16843.—चं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) वाईस चांसलर, हिरियाणा एग्रोक्टवर यूनिविसटो, हिसार, (2) दो प्रोफेसर, वोड साईस एण्ड इन्वार्ज, हिरियाणा एग्रीकटवर यूनिविसटी, गांव उच्चानी, जिला करनाल, के श्रमिक श्रो विरेन्द्र कुमार, पुत्र श्री टेंकन दास, मकान नं 19/5, राम नगर, करनाल तथा उसके प्रवस्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

मीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, प्रब, भोद्योगिक विवाद भिवित्यम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिवित्यमा सं० 3 (44)84—3—श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा अक्त अधिनियम की घारा 7 के भवीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला श्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भथवा सम्बन्धित मामला है :—

वयाश्री विरेन्द्र कुमार की सेवाधों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत। का कुकदार है?